

क. अध्यात्मवाद और मृत्यु:

❖ एक अमर आत्मा।

- बाइबल सिखाती है कि हम तीन "भागों" से बने हैं: "आत्मा और प्राण और देह" (1 थिस्सलुनीकियों 5:23)। यह यह भी सिखाती है कि ये भाग परस्पर-निर्भर हैं। उत्पत्ति 2:7 हमें सिखाता है कि ईश्वर एक देह बनाता है, उसमें जीवन (आत्मा) भरता है, और एक जीवित प्राणी बन जाता है (हिब्रू में "प्राणी", नेफेश = "आत्मा") है।
- जब जीवन की सांस हमें छोड़ देती है, तो हमारा अस्तित्व समाप्त हो जाता है। मृत्यु के बाद हमारे अस्तित्व के किसी भी हिस्से का सचेतन अस्तित्व नहीं रहता। देह मर जाती है, आत्मा (जीवन शक्ति) अपने दाता के पास लौट जाती है, और प्राणी का, देह और आत्मा के मिलन का परिणाम, अस्तित्व समाप्त हो जाता है (सभोपदेशक 12:1-7; यहजेकेल 18:20; अय्यूब 7) :7-9)।
- जब से पाप ने हमारी दुनिया में प्रवेश किया है, शैतान ने ऐसे लोगों का उपयोग किया है जो मृतकों के साथ संवाद करना चाहते हैं और उनसे वर्तमान या भविष्य के बारे में विशेष ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं।
- बाइबल सिखाती है कि "जितने ऐसे ऐसे काम करते हैं वे सब यहोवा के सम्मुख घृणित हैं" (व्यवस्थाविवरण 18:10-12)। इस अपराध की सज़ा मौत थी (लैव्यव्यवस्था 20:27)।

❖ पुराने नियम में मृत्यु।

- हालाँकि अंतिम संस्कार में कोई यह नहीं कहता कि "हमारा रिश्तेदार सीधे नरक की ओर जा रहा है," कई स्वीकारोक्ति सिखाती हैं कि, मृत्यु के बाद, "अच्छे" यीशु के साथ रहने के लिए सीधे स्वर्ग में चढ़ जाते हैं, और "बुरे" को दंडित किया जाता है या बस भटकते रहते हैं। लेकिन बाइबल इस बारे में क्या सिखाती है?
 - (1) क्या हम मरने के बाद परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं? भजन संहिता 115:17
 - (2) क्या जो लोग मर जाते हैं वे जानते हैं कि उनके परिवार या दोस्तों के साथ क्या होता है? अय्यूब 14:21
 - (3) क्या मृत व्यक्ति जीवित लोगों के साथ बातचीत कर सकते हैं? सभोपदेशक 9:6
 - (4) क्या हम मरने के बाद भी सोचना जारी रख सकते हैं? सभोपदेशक 9:5
 - (5) क्या हम मृत्यु के बाद किसी भी प्रकार की गतिविधि कर पाएंगे? सभोपदेशक 9:10
- पुराना नियम सिखाता है कि मृत्यु एक स्वप्न है। ऐसी नींद जिससे तभी जागेंगे जब परमेश्वर हमें वापस जीवन में बुलाएगा (1 राजा 2:10; 14:20; दानियेल 12:13)।

❖ नये नियम में मृत्यु।

- पुराने नियम की तरह नया नियम भी सिखाता है कि मृत्यु एक स्वप्न है जिससे केवल यीशु ही हमें जगा सकता है (यूहन्ना 11:11-14; यूहन्ना 5:28-29)।
- थिस्सलुनिकियों को लिखते समय, पौलुस ने उनसे "सोए हुए लोगों" के बारे में बात की, अर्थात्, जो पहले ही मर चुके थे, और उन्हें बताया कि वे यीशु के दूसरे आगमन पर उसके साथ जाने के लिए पुनर्जीवित होंगे (1 थिस्सलुनिकियों 4:13-18)। यदि पौलुस यह मानता कि विश्वासी मरने के बाद सीधे यीशु के पास जाते हैं, तो उसने उन्हें जो बताया था उसके बजाय वही बताया होता।
- मृतकों के बारे में बात करते समय, पौलुस कहता है कि उन्हें "उसके आने पर" जीवित किया जाएगा, और उससे पहले नहीं (1 कुरिन्थियों 15:22-24)। वह हमें यह भी बताता है कि "हम सब नहीं सोएँगे।" जीवित तो क्षण भर में बदल जायेंगे, परन्तु मरे हुए पहले ही रूपान्तरित होकर उठ खड़े होंगे (1 कुरिन्थियों 15:51-52)।
- पुनरुत्थान यीशु के साथ रहने की कुंजी है। पुनरुत्थान के बिना, कोई उद्धार नहीं है (1 कुरिन्थियों 15:13-18)। यह पुनरुत्थान में होगा जब हम अपनी विरासत प्राप्त करेंगे, और इसलिए हमें उस क्षण की प्रतीक्षा करनी चाहिए (1 पतरस 1:3-5)।

ख. अंतिम दिनों में अध्यात्मवाद:

❖ चिन्ह और चमत्कार।

- अध्यात्मवाद सीधे तौर पर शैतान द्वारा संचालित एक आंदोलन है, और इसकी नींव आत्मा की अमरता है। इसके अनुयायियों का मानना है कि वे मृतकों के साथ संवाद कर सकते हैं, और उनसे अलौकिक शक्तियां प्राप्त करने का दावा करते हैं।
- हालाँकि वे अब ईश्वर द्वारा सीमित हैं, समय आएगा जब वह उन्हें अखंडनीय चमत्कार करने की अनुमति देगा जो उन्हें देखने वालों को आश्चर्यचकित कर देगा (मरकुस 13:22; 2 थिस्सलुनिकियों 2:9; प्रकाशितवाक्य 7:1; 13:13 -14)।
- केवल परमेश्वर के वचन के बारे में हम जो जानते हैं उसमें सुरक्षा है, और यीशु पर पूरा भरोसा, हमें दुश्मन के अंतिम प्रलोभनों का विरोध करने में मदद देगा (यशायाह 8:20; इफिसियों 6:13)।

❖ अध्यात्मवाद का उद्देश्य।

- शैतान का इरादा परमेश्वर के विरुद्ध युद्ध जीतना, उसकी सरकार को उखाड़ फेंकना और उसके सिंहासन पर कब्जा करना है (यशायाह 14:13-14)। ऐसा करने के लिए, वह हम पर शासन करने वाली राजनीतिक शक्तियों से शुरू करके, सभी को जीतने के लिए किसी भी रणनीति का उपयोग करेगा (प्रकाशितवाक्य 16:12-14)।
- "धोखे के महान नाटक में सर्वोच्च अभिनय के रूप में, शैतान स्वयं मसीह का रूप धारण करेगा" (ई जी व्हाइट "महान विवाद", अध्याय 39 पृष्ठ 625)।
- लेकिन यह वह क्षण होगा जब यीशु कहानी को समाप्त कर देगा (प्रकाशितवाक्य 16:15)। शैतान एक पराजित शत्रु है। मसीह द्वारा पराजित, और उन लोगों द्वारा पराजित जो उसके खून से जुड़े हुए हैं (1 यूहन्ना 2:14; 4:3-4; प्रकाशितवाक्य 3:21; 5:5; 12:11)।